दृष्टि The Vision

हिन्दी साहित्य

HINDI LITERATURE

HL-B-DTVF-17

निर्धारित समय: तीन घंटे *Time allowed: Three Hours*	अधिकतम अंक: 250 *Maximum Marks: 250*

नाम (Name): अनुपम जाखड़

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? हाँ ✓ नहीं

मोबाइल नं. (Mobile No.):

ई-मेल पता (E-mail address):

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): 2 / 30/7/2017

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2017] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2017]: 0 0 9 5 5 3 7

विद्यार्थी के हस्ताक्षर (Student's Signature): Anupam

Question Paper Specific Instructions

Please read each of the following instructions carefully before attempting questions:

*There are **EIGHT** questions divided into two **SECTIONS**.*

*Candidate has to attemp **FIVE** questions in all.*

*Questions Nos. **1** and **5** are compulsory and out of the remaining, **THREE** are to be attempted choosing at least ONE from each section.*

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

*Answers must be written in **HINDI** (Devanagari Script).*

Word limit in questions, if specified, should be adhered to.

Any page or portion of the page left blank in the Question-cum- Answer book must be clearly struck off.

Attempts of questions shall be counted in chronological order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly.

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): 122

टिप्पणी (Remarks): उत्तर काफी अच्छे हैं। पूरा प्रश्नपत्र हल करने का प्रयत्न किया करें।

दृष्टि The Vision

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

SECTION 'A'

कृपया इस स्थान पर कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

1. निम्नलिखित काव्यांशों की संदर्भ-सहित व्याख्या (लगभग 150 शब्दों में) प्रस्तुत करते हुए उनके काव्य-सौंदर्य का परिचय दीजिए: $10 \times 5 = 50$

(क) दीपक दीया तेल भरि, बाती दई अघट्ट।
पूरा किया बिसाहना, बहुरि न आँवौं हट्ट।।

संदर्भ:- प्रस्तुत पंक्तियाँ कबीरदास की 'विरह को अंग' से उद्धृत हैं। कबीर निर्गुण ज्ञानाश्रयी धारा के रचनकार हैं।

प्रसंग:- यह पंक्तियाँ कबीर के ब्रह्म से विरह को व्यक्त करती हैं। यह पंक्तियाँ दीपक व बाती को प्रतीक बनाकर विरह-वेदना का चित्रण करती हैं।

व्याख्या:- कबीर कहते हैं कि दीपक में तेल भर कर नहीं घटने वाली बाती लगा दी। दीपक यहाँ शरीर का प्रतीक है तथा बाती विरह-~~अग्नि~~ अग्नि का। कबीर कहते हैं कि भगवान की पूजा करते-करते पूरा हो गया परंतु अभी तक भगवान आये नहीं।

भावना यह है कि भगवान यह जीवन रूपी बाती बुझने से पहले दर्शन दें। अन्यथा यह किस काम का है।

विशेष:- 1) यह पंक्तियाँ दीपक को ~~प्रतीक~~ प्रतीक बनाकर विरह की भावना को व्यक्त कर रही है।
2) यहाँ खड़ी बोली भाषा का प्रयोग हुआ है।
3) कबीर की भाषा खिचड़ी अर्थात मिश्रित है 'अघट्ट' जैसे शब्द इसके प्रमाण हैं।
4) दोहा छंद का प्रयोग किया गया है।
5) 'दीपक दीया' में अनुप्रास अलंकार है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

<u>प्रासंगिकता</u> :- इन पंक्तियों में निर्गुण ब्रह्म की आराधना है। यह आज भी दर्शन की दृष्टि से प्रासंगिक है। जब ~~आस~~ अनास्था व निराशा घेर लेती है, तब भगवान की भक्ति ही आसरा है।

Bi nd 6/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) प्रकृति जोई जाके अंग परी।
स्वान पूँछ कोटिक जो लागे सूधि न काहु करी।।
जैसे काग भच्छ नहिं छाँड़ै जनमत जौन घरी।
धोये रंग जात कहु कैसे ज्यों कारी कमरी?
ज्यों अहि डसत उदर नहिं पूरत ऐसी धरनि धरी।
सूर होउ सो होउ सोच नहिं, तैसे हैं एउ री।।

संदर्भ:- यह पंक्तियाँ सूरदास के भ्रमरगीत सार से ली गई हैं। यह ~~सूरसागर~~ सूरसागर ग्रंथ का प्रसंग है जिसे शुक्लजी ने संकलित किया है।

प्रसंग:- यहाँ गोपियाँ कहती हैं कि जिसकी प्रकृति जैसी है वह वैसा ही रहेगा। यह उद्धव के ऊपर उपालंभ है।

व्याख्या: सूरदास जी कहते हैं कि जिसकी प्रकृति जैसी होती है वह वैसा ही व्यवहार करता है। जिस तरह कुत्ते की पूँछ करोड़ों प्रयत्न करने पर भी सीधी नहीं होती। कौआ कहीं भी हो वह अच्छ खाना नहीं छोड़ेगा। काली कमरी का रंग धोने से नहीं जायेगा। साँप डसने की प्रवृति कभी नहीं छोड़ेगा। जैसे लोग तो जैसे भी हैं हमेशा ऐसे ही रहेंगे। इनकी प्रवृति में परिवर्तन नहीं आयेगा।

भाव यह है कि प्रकृति बदलना संभव नहीं है उद्धव को प्रेम का कितना भी ज्ञान दो वह योग को नहीं छोड़ेगा।

विशेष:- 1) यह चिंतन अन्य जगहों पर भी देखने को मिलता है।
प्रकृति का न बदलना लोक-भाषा, लोक-आचरण के उदाहरणों द्वारा समझाया गया है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

2) सूरदास जी ने ब्रजभाषा का प्रयोग किया है
3) प्रतीकों का प्रयोग हुआ है तथा भाषा विंबधर्मी है

प्रासंगिकता :- यह शब्द आज भी प्रासंगिक हैं। हमें अपने शत्रुओं से सावधान रहना चाहिए। चीन भारत पर पहले भी ~~अ~~ हमला कर चुका है इसलिए भारत को तैयार रहना चाहिए।

6/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) जेठ जरै जग बहै लुवारा। उठै बवंडर धिकै पहारा।
बिरह गाजि हनिवंत होइ जागा। लंका डाह करै तन लागा।
चारिहुँ पवन झँकोरै आगी। लंका डाहि पलका लागी।
दहि भइ स्याम नदी कालिंदी। बिरह कि आगि कठिन असि मँदी।
उठै आगि औ आवै आँधी। नैन न सूझ मरौं दुख बाँधी।
उधजर भई माँसु तन सूखा। लागेउ बिरह काग होइ भूखा।
माँसु खाइ अब हाड़न्ह लागा। अबहूँ आउ आवत सुनि भागा।
परबत समुंद मेघ ससि दिनअर सहि न सकहिं यह आगि।
मुहमद सती सराहिअै जरै जो अस पिय लागि।।

संदर्भ:- यह पंक्तियाँ प्रेममार्गी, लोक-अवधी के मिठास से युक्त जायसी के 'पद्मावत' से उद्धृत हैं; यह नागमती वियोग खण्ड से लिया गया पद है।

प्रसंग:- यहाँ नागमती के वियोग का वर्णन जायसी ने लोक अवधी में किया है।

व्याख्या:- यहाँ जायसी कहते हैं लू चलने से जग जल रहा है, बवंडर उठ रहे हैं आँधी का विरह रूपी गर्जना हो रही है। लंका की आग की तरह शरीर जल रहा है। हवा उस अग्नि को और तीव्र कर रही है।

यह विरह की आग भगवान श्रीकृष्ण की यमुना के से भी नहीं बुझ सकती। आँधी उठी हुई आ रही है सारा ~~शरीर~~ शरीर सूख गया है तथा विरह रूपी काग इसे के खाने में लगा है। माँस को खा गया है अब हड्डियाँ खा रहा। भागते हुए अभी आइये प्रियतम नहीं तो अनर्थ हो जावेगा। यह आग पर्वत, समुद्र, बादल, चन्द्रमा, सूर्य कोई नहीं बुझा सकता।

जायसी कहते हैं इस विरह अग्नि में मैं स्वाहा हो जाऊँगी। इस प्रकार जायसी ने नागमती के विरह का वर्णन अलग-अलग प्रतिमानों से किया है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

विशेष :- 1) यही सूरदास की राधा के विरह में भी है- "अति मलीन वृषभानु कुमारी"

2) जायसी ने विरह की अग्नि का वर्णन विभिन्न प्रतीकों से किया है।

3) यहाँ रूपक अलंकार का सुंदर प्रयोग हुआ है।

4) जायसी की भाषा लोक-मिठास, लोक-प्रतीकों से युक्त है।

प्रासंगिकता :- प्रेम एक सर्वकालिक विषय है प्रेम का ~~महत्व~~ महत्व आज बाजारीकरण से घट रहा है। परंतु यह विरह नागमती के प्रेम की एकनिष्ठता, शुचिता का प्रमाण है।

6/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) किसबी किसान कुछ बनिक भिखारी भाट
चाकर, चपल नट, चोर, चार चेटकी।
पेट को पढ़त, गुन गढ़त, चढ़त गिरि,
अटन गहन बन अहन अखेटकी।
ऊँचे नीचे करम धरम अधरम करि,
पेट ही को पचत बेचत बेटा बेटकी।

संदर्भ:- यह पंक्तियाँ 'रामचरितमानस' के ~~रचनाकार~~ रचनाकार, रामकाव्यधारा के अग्रणी तुलसीदास की मुक्तक रचना कवितावली से ली गई हैं।

प्रसंग:- इन पंक्तियों में समाज के सभी वर्गों की समस्याओं का वर्णन है। यहाँ चारित्रिक पतन की पराकाष्ठा को दिखाया गया है। कलियुग का वर्णन है।

व्याख्या:- यहाँ तुलसीदास जी किसान, भिखारी, भाट, नौकर, नट, चोर की स्थिति का वर्णन कर रहे हैं। यहाँ सबका जीवन उद्देश्य पेट भरना हो गया है। यहाँ सब लोग उल्टे-सीधे कर्म करने में लगे हैं। कलियुग में लोग अलग-अलग समस्याओं से जूझ रहे हैं। धर्म-अधर्म का विभेद भूल गये हैं। सारे कार्य जठराग्नि की शाँति के लिए किये जा रहे हैं। यहाँ तक की बेटे-बेटियों को बेचा जा रहा है।

यहाँ भाव तुलसीदासजी के व्यथित मन से निकले हैं। वे रामराज्य की परिकल्पना करते हैं परंतु यहाँ तो ऊँच-नीच व धर्म-अधर्म में अंतर ही नहीं रह गया है।

विशेष:- ~~विशेष~~

1) वर्गगत समस्याएँ वर्णित हैं। कलियुग की विषमताओं का वर्णन आज भी प्रासंगिक है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
Please do not write anything except the question number in this space)

2) कवित्त छंद का प्रयोग

3) ब्रज भाषा का प्रयोग। तुलसीदास जी का ब्रज व अवधी दोनों पर समान अधिकार।

4) द्वितीय पंक्ति में अनुप्रास का प्रयोग।

5) लयात्मक भाषा का प्रयोग।

प्रासंगिकता :- आज भ्रूण हत्या का अभिशाप इन ~~पंक्ति~~ पंक्तियों में भी व्यक्त हुआ है। समाज के उत्थान के लिए यह छंद समस्याओं का परिचायक है।

8/10

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) आए जोग सिखावन पाँड़े।
परमारथी पुराननि लादे ज्यों बनजारे टाँड़े।।
हमरी गति पति कमलनयन की जोग सिखैं ते राँड़े।
कहौ मधुप, कैसे समायँगे एक म्यान दो खाँड़े।।
कहु षटपद, कैसे खैयतु है हाथि के संग गाँड़े।
काकी भूख गई बयारि भखि बिना दूध घृत भाँड़े।।
काहे को झाला लै मिलवत, कौन चोर तुम डाँड़े।
सूरदास तीनों नहिं उपजत धनिया धान कुम्हाँड़े।।

संदर्भ:- यह पंक्तियाँ सूरदास के भ्रमरगीर सार से उद्धृत हैं।

प्रसंग:- यहाँ योग व प्रेम की तुलना की गई। उद्धव को सगुण प्रेम की विशेषताएँ बताई गई हैं।

व्याख्या:- उद्धव को संबोधित करते हुए गोपियाँ कहती हैं की हमें योग सिखाने आया है। तुम बनजारे की भाँति यह योग की पोटली लादे घूम रहा है। हमारी गति तो भगवान श्रीकृष्ण के चरणों में होती है। जो राँड होगी वही योग सीखेगी। जैसे एक म्यान में दो तलवारे नही रह सकती, जैसे हाथी के साथ घोड़े नही रह सकते और जिसकी भूख दूध व घी के बिना नही जा सकती वैसे ही श्रीकृष्ण ही हमारे ईष्ट हैं और उनकी भक्ति ही हमारी मुक्ति का मार्ग।

सूरदास जी कहते हैं एक ही ऋतु में धनिया, चावल, कुम्हाँड़ नही हो सकते। अर्थात हमने पहले ही भगवान को समर्पित कर दिया। अब योग के लिए कोई स्थान नही है।

विशेष:- 1) उपालंभ का प्रयोग।
2) उदाहरण अलंकार का प्रयोग
3) द्वितीय पंक्ति में अनुप्रास

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

5) निर्गुण दर्शन को सगुण के सामने फीका बताया गया है।

प्रासंगिकता :- ज्ञानदंभ, शास्त्रवाद का विरोध आज भी प्रासंगिक है। लोक गाथ के उदाहरणों से यह स्पष्ट किया गया है।

6/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

2. (क) 'शृंगार रस का ऐसा सुंदर उपालंभ-काव्य दूसरा नहीं है।' सूरदास के भ्रमरगीत के संदर्भ में इस कथन के औचित्य पर विचार कीजिए। 20

उपालंभ का अर्थ है उलाहना देना। शुक्लजी ने अपनी आलोचना में भ्रमरगीत सार को उपालंभ काव्य कहा है यह वचनवक्रता, एवं वाग्विदग्धता से परिपूर्ण है। वचनवक्रता का अर्थ है टेढ़े-मेढ़े ढंग से अपनी बात कहना। अर्थात् सूरदास के पास अपनी बात कहलवाने के अनेक तरीके थे।

यहाँ उपालंभ गोपियों व उद्धव के संवाद में है यह उपालंभ योग के विरोध में, श्रीकृष्ण द्वारा छोड़कर चले जाने में तथा कुब्जा के प्रति असूया संचारी भाव के रूप में है। उद्धव को भी ताने सुनने पड़ रहे हैं क्योंकि वह गोपियों को योग की शिक्षा दे रहे हैं।

कृष्ण ने गोपियों को विरह-विदग्ध किया। गोपियाँ श्रीकृष्ण से प्रेम करती हैं परंतु उन्होंने उन्हें छोड़कर मथुरा जाना स्वीकार किया। गोपियाँ कहती हैं-

"प्रीति करे दीन्ही गरे छुरी";

प्रेम के साथ जिस प्रकार शिकारी दाने डालकर जाल में फँसाता है उसी प्रकार श्रीकृष्ण ने गोपियों के साथ किया। गोपियाँ उपालंभ से कहती हैं-

"काहे को गोपीनाथ कहावत"

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

उद्धव का योग गोपियों को नीरस, शुष्क लगता है। योग की साधना कठिन है तथा इसका वर्णन वेदों, स्मृतियों, पुराणों में युवतियों के लिए कहीं नहीं है। इसलिए योग को ठगोरी बताते हुए गोपियाँ कहती हैं:-

"जोग ठगौरी ब्रज न बिकैहै"

उद्धव के ज्ञानदंभ को गोपियाँ दूर करती हैं। गोपियाँ उद्धव को कहती हैं कि तुम अपना योग मथुरा में बेचो। यहाँ के लोग तो कृष्ण को देखकर ही प्रसन्न होंगे। वह उद्धव को कहती हैं:-

"~~जोग~~ आए जोग सिखावन पाँड़े।"

कुब्जा के प्रति भी गोपियाँ उपालंभ का प्रयोग करती हैं। कुब्जा ने उनसे श्रीकृष्ण को छीन लिया। इसलिए गोपियाँ कहती हैं:-

~~जोग~~ "जोग कूबरी न दीजै।"

उपालंभ सूरदास की भ्रमरगीतसार में एक साहित्यिक उपलब्धि है। इससे भाषा शैली और अधिक प्रभावशाली व भावों की बोधगम्यता बढ़ जाती है।

11½/20

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) कबीर के दर्शन पर प्रकाश डालिये। 15

संत काव्यधारा के अग्रणी कबीर का दर्शन संश्लिष्ट है। उन्होंने सबसे अच्छी बातों को ग्रहण किया। अनपढ़ होने के बावजूद भी ज्ञानाश्रयी धारा में रखा जाना कबीर के दार्शनिक जीवन का प्रमाण है।

कबीर ने इस्लाम का एकेश्वरवाद भी माना। परंतु कबीर का ईश्वर सर्वव्यापी है। कबीर ने कहा -
" ऐसे घटि घटि राम हैं दुनिया देखे नाही"

कबीर ~~विरु~~ निर्गुण भक्ति में विश्वास रखते थे। उन पर शंकराचार्य के अद्वैतवाद का प्रभाव है। उन्होंने जगत को मिथ्या व ब्रह्म को सत्य माना।

सिद्ध व नाथ ~~धर्म~~ का सम्प्रदाय से भी कबीर ने धार्मिक-पाखण्ड का विरोध, गुरु के प्रति श्रद्धा आदि ग्रहण किये। उन्होंने हठयोग व रहस्यवाद नाथों से लिया। कबीर का रहस्यवाद -
" लाली मैं देखन गई, जित देखूँ तित लाल"

कबीर ने ब्रह्म को एक माना। यह प्रकट होता है-
' जल में कुंभ, कुंभ में जल, बाहर भीतर पानी,
फूटा कुंभ, जल जलहिं समाना है'

कबीर सहज साधना को स्वीकार किया। उन्होंने कहा - सहज सहज सब कोय कहै
सहज न चिन्हे कोय "

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

इस प्रकार कबीर का दर्शन सभी दर्शनों का संश्लिष्ट रूप है। यह कई दर्शनों की अच्छाइयों को लेकर बनाया गया है। जो कबीर को अच्छा लगा वही उन्होंने ग्रहण किया -

"सार सार गहि लेय थोथा देहि उड़ाय"

7/15

बेहतर बनाएँ! मॉडल उत्तर देखें

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) क्या 'भ्रमरगीतसार' को निर्गुण मत पर सगुण मत की विजय का काव्य मानना उचित है? तार्किक उत्तर दीजिए। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

'भ्रमरगीतसार' में सूरदास ने निर्गुण पर सगुण की श्रेष्ठता सिद्ध करने का प्रयास किया है। यहाँ उद्धव निर्गुण के प्रतीक हैं जो ज्ञानदंभी हैं। गोपियाँ सगुण प्रेम की प्रतीक हैं।

पहले सूर प्रेम की श्रेष्ठता सिद्ध करते हैं। गोपियाँ श्रीकृष्ण से एकनिष्ठ प्रेम करती हैं। गोपियाँ श्रीकृष्ण के प्रेम की स्मृति से विरह-दग्ध हो रही रही हैं। यहा गोपियाँ कहती हैं-

"उधो मन न भए दस बीस
एक हुतो सो गयो स्याम संग
को अवराधे ईस"

इसके बाद गोपियाँ निर्गुण की कमियाँ बताती हैं। जिसका रूप, आकार नहीं, जिसका कोई माता-पिता नहीं वह हमें इष्ट नहीं हो सकता। गोपियाँ कहती हैं-

'रेख न रूप, बरन जाके नाहिं
ताको हमे बतावत"

योग उनके अनुसार ठग की विद्या है। योग के लिए कठोर साधना, भस्म लगाने की जरूरत है, परंतु सगुण भक्ति में तो आनंद है। वे उद्धव से कहती हैं-
"जोग ठगौरी ब्रज न बिकैहैं"

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

गोपियाँ कहती है कि जिस भगवान श्रीकृष्ण ने यह संसार बनाया, उन्होंने हमारे साथ रासलीला रची, क्या यह सब मिथ्या है। गोपियाँ इस तरह निर्गुण को नीरस, शुष्क बताती हैं - "निरगुण कौन देस को वासी"

गोपियाँ कहती हैं यह योग कुब्जा को सिखाओ। वह स्वयं कृष्ण की संगति में रहकर प्रेमास्वादन कर रही है, जबकि हमको उससे वंचित करने का प्रयत्न कर रही है। अंततः उद्धव भी हार मानकर कहते हैं - "अब अति पंगु भयो मन मेरे --- भयो सगुण को चेरो"

8½/15

ठीक है
सटीक उदाहरण
दिए हैं

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) बौद्धों का निर्वाण, योगियों की समाधि और पागलों की सी सम्पूर्ण विस्मृति मुझे एक साथ चाहिये। चेतना कहती है कि तू राजा है, और उत्तर में जैसे कोई कहता है कि तू खिलौना है- उसी खिलवाड़ी वटपत्रशायी बालक के हाथों का खिलौना है। तेरा मुकुट श्रमजीवी की टोकरी से भी तुच्छ है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

संदर्भ:- यह पंक्तियाँ 'स्कंदगुप्त' से उद्धृत है। जयशंकर प्रसाद की रचना है।

प्रसंग:- यहाँ स्कंदगुप्त संशय की स्थिति में है। वह अपने जीवन के आंतरिक द्वन्द्व में उलझा हुआ है।

व्याख्या:- यहाँ स्कंदगुप्त को बौद्धों का निर्वाण भी चाहिए तथा योगियों की समाधि भी। उसमें अधिकार लोलुपता नहीं है। उसे मुकुट की चाह नहीं है। वह चेतना में राजा है परंतु अंतर्मन से वह देवसेना के साहचर्य में जीवन व्यतीत करना चाहता है। उसे मुकुट नहीं चाहिए।

विशेष:- 1) यहाँ शैवाद्वैतवाद के आनंदवाद की सलन है।
2) तत्सम शब्दों का प्रयोग हुआ है।

5/10

द्वैत दार्शनि

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

7. (क) 'स्कंदगुप्त' नाटक में अभिव्यक्त राष्ट्रीय चेतना पर प्रकाश डालिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

~~स्वच्छंतावा~~ स्वच्छंदतावादी धारा के नाटककार जयशंकर प्रसाद ने 'स्कंदगुप्त' नाटक 1928 में लिखा। इस नाटक का उद्देश्य राष्ट्रीय चेतना को स्फूर्त करना था। प्रसाद ने इसके अलावा 'चन्द्रगुप्त', 'अजातशत्रु', 'ध्रुवस्वामिनी' जैसे नाटकों से सांस्कृतिक गौरव व ऐतिहासिक गुणगान द्वारा हतोत्साहित समाज में ऊर्जा भरने का प्रयास किया।

गुप्त साम्राज्य को प्राचीन भारत का स्वर्णयुग भी कहा जाता है। यह नाटक 'हूणों' को अंग्रेजों का प्रतीक मानता है। हूणों की बर्बरता जलियांवाला बाग हत्याकाण्ड से के समानार्थ थी। हूणों की पराजय भारतीय युवावर्ग को प्रेरित करने लिए है। मातृगुप्त भी कहते हैं-

"कर दें न्यौछावर सर्वस्व
हमारा प्यारा भारतवर्ष"

सोये हुए भारतीय युवा वर्ग का प्रतीक स्कंदगुप्त है। स्कंदगुप्त द्वन्द्व में है। उसमें अधिकार सुख का लोभ नहीं है। वह राष्ट्र के प्रति अपनी जिम्मेदारियों के लिए सजग नहीं है। इसलिए पर्णदत्त कहता है. "आज आर्य जाति का प्रत्येक बच्चा सैनिक है, सैनिक के अलावा और कुछ नहीं।"

सांस्कृतिक गौरव व ऐतिहासिक परिवेश स्वाभिमान जगाने के लिए है। 'भारत-भारती' में गुप्त जी भी कहते हैं-

"हाँ भारतवर्ष ही संसार का शिरमौर है।"

यही भावना 'भारत-दुर्दशा' में भारतेन्दु ने भी व्यक्त की है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

देश में 1928 में क्रांतिकारी राष्ट्रवाद का दौर था। इन परिस्थितियों में युद्ध का समर्थन प्रसाद ने भी किया। उन्होंने कहा - "युद्ध क्या गान नहीं"। विदेशियों की पराजय देशप्रेम जगाने के लिए थी।

देश में हिन्दू-मुस्लिम एकता का अभाव था। इसे प्रसाद ने बौद्ध व ब्राह्मण धर्म के विवाद से दर्शाया। उन्होंने कहा - "ब्राह्मण क्यों महान है? क्योंकि वह त्याग व क्षमा की मूर्ति है"। धातुसेन के द्वारा बौद्ध धर्म को परिवर्तन का प्रतीक बताया।

पर्णदत्त कहते हैं जिस देश के युवा विलासी व आलसी हो उसे स्वतंत्र रहने का हक नहीं है। पर्णदत्त, देवसेना जैसे पात्र देशप्रेम की अलख जगाते हैं। बंधुवर्मा अपना राज्य त्याग देते हैं और देवसेना अपने प्रेम का बलिदान देकर कालजयी पात्र बन जाती है।

क्षत्रिय धर्म के बारे में स्कंदगुप्त में कहा गया कि यह पीड़ितों की रक्षा करना, अनाथों को आश्रय व नारियों के सम्मान की लाज रखना है। इसमें अधिकारों के प्रयोग के लिए कहा गया - "अधिकार का प्रयोग त्रस्त जनता की रक्षा तथा आतंक से मुक्ति में होना चाहिए।"

गाँधीजी के स्वप्नों के भारत में कोई भूखा नहीं रहना चाहिए। यह भावना अभिव्यक्त होती है पर्णदत्त के शब्दों में - "अन्न पर अधिकार भूखों का तथा धन पर अधिकार है देशवासियों का।"

इस प्रकार 'स्कंदगुप्त' नाटक प्रसाद जी के द्वारा

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

रचित एक साहित्यिक उत्कृष्ट रचना है। इसकी तत्समी भाषा भारतीय समाज को अंग्रेजी के सामने आत्मबल प्रदान करती है। कमला एवं रमा के चरित्र देशप्रेम की प्रेरणा देते हैं। अंत में देवसेना के ये शब्द उद्बोधन करते हैं-

" देश को कब तक निहारोगे
डूबते को कब उबारोगे "

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ख) क्या 'भारत-दुर्दशा' नाटक नवजागरण चेतना को अपने भीतर समाहित करने में सफल हो पाया है? सोदाहरण उत्तर दीजिये। 15

हिन्दी नाटक के प्रणेता भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने इस नाटक की रचना 1875 ई. में की। उस समय देश हिन्दू-मुस्लिम फूट, अंग्रेजी राज, अकाल, भूखमरी, रोग जैसी समस्याओं से जूझ रहा था। भारतेंदु स्वयं एक रंगकर्मी थे। उन्होंने अपने रंगकर्म द्वारा नवजागरण की चेतना का प्रसार किया।

नवजागरण का अर्थ है पश्चिमी व भारतीय संस्कृति के टकराव से उत्पन्न स्थिति। इस समय भारत को रूढ़ियों से दूर होकर एक राष्ट्र का निर्माण करने की जरूरत थी। इसमें भारतेंदु कहते हैं-

"रोवहु सब मिलि के, आवहु भारत भाई।
हा! हा! भारत-दुर्दशा देखी न जाई।।"

यहाँ 'रोना' समस्याओं की तार्किक पहचान करना है इंगित करता है। 'सब मिलि' से सम्पूर्ण देशवासियों में एकता व राष्ट्र के निर्माण की तरफ इशारा है। 'योगी' प्राचीन भारतीय सभ्यता के उत्कर्ष का प्रतीक है। इसमें प्राचीन गौरवगान द्वारा आत्म-गौरव व आत्मविश्वास जागृत करने का प्रयत्न है -

"सबके पहिले जेहि सभ्य विधाता कीन्हो"

'अंधेर-नगरी', में भी भारतेन्दु ने नवजागरण का ही प्रयास किया है। कारणों की समीक्षा करते हुए भारतेन्दु कहते हैं- "ये लो हिन्दुस्तान का मेवा फूट और बैर"

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

भारतेन्दु कारणों की के अनुसार धार्मिक पाखण्ड, जाति प्रथा ने भारतीयों को कमजोर बना दिया। वे हैं- "जाति पाँति अनेकन करि, नीच ऊँच बनायो" धर्म के पाखण्डों पर उन्होंने कहा - "सबसे पहले धर्म ने ब्राह्मणों को ब्रह्म बना दिया। इससे वे कर्तव्य विमुख हो गये।" इस तरह कर्ममूलकता के दूरी भारत की दुर्दशा का कारण बनी।

अंत में बौद्धिक वर्ग की निष्क्रियता भी भारत की प्रगति को रोक रही है। बौद्धिक वर्ग स्त्रीचों के गोले व कमेटियों की फौज बनाते हैं। दुश्मनों से बचने के लिए चूड़िया पहनने का उपाय सुझाते हैं।

इस प्रकार भारतेन्दु ने समस्त समस्याओं का वर्णन करके नवजागरण करने का प्रयास किया। 'मदिरा' को व्यंग्यात्मक भाषा में देश की बर्बादी का कारण बताया- "दूध सुरा, दूधहि सुरा, सुरा धन धाम"

भारतेन्दु अंत में 'भारत-भाग्य' से आत्महत्या करवाते हैं। यह प्रतीक है भाग्यवादी न बनने का। अंत में भारतेन्दु कहते हैं-

"जागो जागो रे भाई"

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

(ग) 'देवसेना' हिन्दी नाट्य परंपरा की अविस्मरणीय चरित्र है।' क्या आप इस कथन से सहमत हैं? सहमति या असहमति के कारण बताइए। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

प्रसाद जी ने नारी-चरित्र हमेशा से सुदृढ़ रहे हैं। श्रद्धा (कामायनी), ध्रुवस्वामिनी, देवसेना, विजया सभी चरित्र विशिष्ट हैं। प्रसादजी पर नारी की मध्यकालीन चेतना के आरोप लगे हैं। प्रसाद ने कहा - "नारी तुम श्रद्धा हो"। परंतु केवल इस आधार पर कहना उचित नहीं है।

'देवसेना' का चरित्र विशिष्ट है। यह एक आदर्शवादी चरित्र है। देवसेना के चरित्र की विशेषताएँ इस प्रकार हैं-

1) सहृदयता :- देवसेना के हृदय में भावुकता व प्रेम का आधिक्य है। वह हर परिस्थिति मे गीत गाना चाहती है। गीतों के द्वारा वह अपने दुःख पर नियन्त्रण करती है।

2) देशसेवा को सर्वोपरि माना। देवसेना ने देशसेवा व राष्ट्रप्रेम के लिए अपना व्यक्तिगत प्रेम त्याग दिया। वह कहती है - "आपको अकर्मण्य बनाने के लिए देवसेना जीवित नहीं रहेगी।"

3) लोकबद्धता :- देवसेना एक आदर्श चरित्र है। वह श्रद्धा, प्रेम व देशसेवा में तत्पर रहती है। प्रेम में असफल रहने पर भी वह व्यावहारिक धरातल पर यह प्रकट नहीं होने देती। जब पर्णदत्त व देवसेना भीख माँगने पर बाधित हो जाते हैं तब भी देवसेना उत्साह से यह स्वीकार करती है।

देवसेना के समकक्ष अन्य चरित्र मोहन राकेश

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

के 'आषाढ़ ~~का~~ एक दिन' की मल्लिका है। मल्लिका में भी कोई द्वन्द्व नहीं है। परंतु मल्लिका भी परिस्थितियों से निर्मित होती है। वह 'अभाव की संतान' को जन्म देने पर मजबूर हो जाती है। परंतु देवसेना अंत तक देशप्रेम पर ही अडिग रहती है। वह 'स्कंदगुप्त' व 'विजया' के बीच में नहीं आना चाहती और कहती है–

"मेरे इस जीवन के प्रेम और इस जीवनके प्राप्य। क्षमा!"

देवसेना अपने प्रेम को इसलिए भी उजागर नहीं करती कि लोग कहेंगे मालव राज्य देकर देवसेना का विवाह किया गया है।

अतः देवसेना स्पष्ट रूप से अविस्मरणीय चरित्र है। प्रसाद जी के अन्य नारी-चरित्रों से भी अधिक सशक्त, ~~सुगढ़~~ पात्र जो पाठक पर अमिट प्रभाव छोड़ता है।

9/15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

8. (क) 'आषाढ़ का एक दिन' शीर्षक की सार्थकता पर विचार कीजिये। क्या आप इस नाटक का इससे बेहतर नाम प्रस्तावित कर सकते हैं? 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

'आषाढ़ का एक दिन' आधुनिक हिन्दी नाटककार मोहन राकेश द्वारा रचित है। यह 1951 ई. में लिखा गया जब आजादी का मोहभंग, व्यक्तित्व विखण्डन व अस्तित्ववाद का दौर था।

शीर्षक की सफलता होती है जब यह नाटक को सार्थक बनाए। यह बिंबधर्मी व प्रतीकधर्मी हो। शीर्षक रचना के केन्द्र में होना चाहिए तथा रचना की के उद्देश्य को प्रेषित करे। शीर्षक पात्रों के संवाद व अभिनय में भी झलकना चाहिए।

शीर्षक घटना-प्रधान, वर्णन-प्रधान, चरित्र-प्रधान अथवा चरित्र-प्रधान हो सकते हैं। 'आषाढ़ का एक दिन' परिस्थिति प्रधान शीर्षक है। • मोहन राकेश के नाटकों में पात्र आधे-अधूरे होते हैं, पूर्ण मनुष्य की खोज रहती है।

• नाटक का प्रथम अंक आषाढ़ की वर्षा से आरंभ होता है। वर्षा मल्लिका के अंदर, प्रेम, अनुराग की भावना संचरित करती है। यही आषाढ़ की वर्षा अंतिम अंक में भी आती है। यहाँ गर्जना अधिक है, वर्षा कम है। यह वर्षा मल्लिका को निराश व हताश करती है। वह अब वर्षा में भीगना नहीं चाहती। अब परिस्थिति बदल चुकी है। मल्लिका संज्ञा से विशेषण बन चुकी है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

यही 'आषाढ़ की वर्षा' ने कालिदास की रचनात्मकता का आधार भी बनती है। कालिदास भी परिस्थितियों के अनुसार चालित होता रहा। उसके निर्णय स्वयं के नहीं थे, वे अभावों की सहज प्रतिक्रिया थे। इस वह कहता है- "मैंने सोचा कभी न कभी परिस्थितियों पर नियंत्रण पा लूँगा। परंतु मैं परिस्थितियों से बनता व चालित होता गया।'

उपरोक्त पंक्तियाँ दर्शाती हैं कि परिस्थितियाँ ज्यादा बलवान हैं चरित्र की तुलना में। अन्य शीर्षक ~~अगर~~ अगर दीया दिया जाता तो वह 'मल्लिका' हो सकता था। यह चरित्र-प्रधान होता परंतु मल्लिका भी परिस्थितियों की वजह से 'विलोम' के साथ सहचर करने को मजबूर होती है तथा 'अभाव की संतति' को जन्म देती है। अतः यह शीर्षक संगत नहीं होता।

"आषाढ़ का एक दिन' शीर्षक बिंब धर्मी भी है यह परिस्थितियों का प्रतीक भी है, रचना के केन्द्र में भी है। यह शीर्षक "आषाढ़स्य ~~एक~~ प्रथम दिवसे" से प्रेरित लगता है।

मोहन राकेश का यह नाटक अत्यधिक सफल रहा है। उसमें इस शीर्षक का भी अत्यधिक योगदान है। इस प्रकार "आषाढ़ का एक दिन" शीर्षक ही उचित है। अन्य शीर्षक उचित ढंग से इसकी व्यंजना नहीं कर पाते।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) 'आषाढ़ का एक दिन' नाटक में इतिहास और कल्पना के समन्वय पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

विभिन्न रचनाकारों ने इतिहास का सहारा लेकर वर्तमान की समस्याओं को उठाने का प्रयत्न किया है। स्वामी दयानंद सरस्वती ने भी कहा 'वेदों की ओर चलो'। प्रसाद ने 'अजातशत्रु', 'स्कंदगुप्त', 'चन्द्रगुप्त' तथा जगदीश चन्द्र माथुर ने 'कोणार्क' नाटकों में इतिहास का प्रयोग किया। इसी प्रकार मोहन राकेश ने इतिहास का प्रयोग 'आषाढ़ का एक दिन' व 'लहरों के राजहंस' में किया।

दिनकर जी ने कहा- "जब भी अतीत में जाता हूँ, युग के दीये जलाता हूँ।" मोहन राकेश ने भी इतिहास से प्रेरणा लेकर अपने पात्रों को गढ़ा। उन्होंने कहा- "कालिदास एक सुगढ़ पात्र है, अतः एक नये पात्र को गढ़ने में ऊर्जा क्यों लगाई जाए।"

मोहन राकेश का मानना था कि हिन्दी नाटक पश्चिमी प्रतीकों पर नहीं चल सकता। हमें हिन्दी भाषी क्षेत्रों की सांस्कृतिक विशेषता के अनुरूप पात्र व चरित्र योजना गढ़नी होगी।

मोहन राकेश ने अतीत से सिर्फ पात्र लिये हैं। घटनाएँ वर्तमान का चित्रण करती हैं। समस्याएँ भी वर्तमान की हैं। इसमें निहित समस्याएँ हैं व्यक्तित्व विखण्डन,

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

पूर्ण मनुष्य की तलाश तथा परिस्थितियों की महत्ता। यह सब कल्पना के द्वारा प्रदान किया गया है। मोहन राकेश ने इस तरह इतिहास का मिथकीकरण किया है। परंतु इतिहास के तथ्य समान हैं, उनमें कोई त्रुटि नहीं है।

इतिहास में कल्पना के रंग प्रसाद ने भी भरे हैं। प्रसाद के यहाँ गौरवगान अधिक है, वह महिमामंडन यहाँ नहीं है। पात्र भी यथार्थवादी हैं तथा कहीं-कहीं पर लोक-भाषा का प्रयोग भी हुआ है। जैसे - दुध औंटा दिया है।

अतः राकेश ने 'आषाढ़ के एक दिन' में इतिहास की चाशनी में कल्पना के रंग घोले हैं। इतिहास ने पर्दे का काम किया है तथा कल्पना ने दृश्य निर्माण का।

9/11

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) क्या भारत-दुर्दशा को एक त्रासदी माना जा सकता है? तर्कपुष्ट उत्तर दीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

त्रासदी पश्चिमी नाटक परंपरा से आयी है। यहाँ नायक ट्रेजिक हीरो होता है। वह अतिनैतिकता, सत्यता के कारण अंत में पराजय प्राप्त करता है। यह पराजय मानसिक तौर पर ट्रूरन, मृत्यु आदि के द्वारा सघन विरेचन से व्यक्त की जाती है।

भारत-दुर्दशा में सामान्य-दृष्टि से अंत दुःखद है। भारत-भाग्य आत्महत्या करता है। भारत का भविष्य भी अंधकार मय है। रोग, आलस्य, फूट, अंधकार भारत को घेरे हुये हैं। इस प्रकार अंत दुःखद है, परंतु सघन विरेचन की अनुभूति नहीं होती।

यहाँ पर शुरुआत से ही दुख की स्थिति दिखाई गई है। भारत की वेशभूषा से वह फटेहाल रहता है। यहाँ कथानक में वक्रता नहीं है, सीधा सरल कथानक है। अंत में भी भारत-भाग्य का मरना भाग्यवादी चेतना का विरोध है। अंतिम पंक्तियाँ भी नवजागरण का संदेश देती हैं-

"जागो जागो हे, भाई"

अंत: अंत तकनीकी दृष्टिकोण से दुखद नहीं है। इसलिए भारत-दुर्दशा को त्रासदी नहीं कहा जा सकता। यह दुखद अंत परिस्थितियों के कारण है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

अंत दुःखद नहीं होना, त्रासदी न होना भारतेन्दु की विफलता नहीं है। यह भारतेन्दु का मौलिक प्रयास है जिसका उद्देश्य नवजागरण है। यहाँ त्रासदी लिखना नाटककार की चेष्टा नहीं है

Copyright – Drishti The Vision Foundation